'चार' बार मनन से बने आचार...

अपने को तो त्वरित निर्णय लेने की आदत है इसलिए विचार करने की लंबी माथापच्ची करने को मैं नहीं मानता हूँ। बार-बार सोचने से कोई निर्णय पर पहुँच नहीं सकता। एक आदमी अपनी कार्यशैली के मुताबिक ऐसा कह रहा था।

दूसरे ने कहा मेरा सिद्धांत अलग है। विचार शब्द को मैं इस तरह सोचता हूँ। विचार को संधिपात करे तो 'वि' 'चार' । अर्थात् विशेष, 'चार' माना चार बार विशेष रूप से विचार कर निर्णय लेने से निर्णय पक्का हो जाता है। बाह्य प्रभाव से निर्णय न करें उसमें परिणाम अनुकूल न आने की पूरी शंका बनी रहती है।

- ब्र. कु. गंगाधर

मुख्य बात है कि 'अति जल्दबाज़ी' भी निरर्थक और अतिशय विलंब भी निरर्थक। दिमाग का अपना एक तंत्र है। जिसको समझने के लिए इसे हम दो भागों में बांटते हैं -'चेतन मन' उर्फ बाह्यमन और दूसरा अवचेतन मन उर्फ अन्तर्मन।

बाह्य मन अपनी वाणी, विचार, वर्तन आदि अनेक तरीकों से विचार करता है। इसलिए समय-समय पर वर्तन अलग-अलग देखने को मिलता है। अपने साथ हमेशा अच्छी तरह बर्ताव करता व्यक्ति कभी-कभार खराब रीति से पेश आता है। तब हम एक प्रचलित विधान करते हुए कहते हैं कि आपको मैंने ऐसा नहीं माना था लेकिन मूल बात यह है कि किसी व्यक्ति के प्रति 'धारणा' बना लेने का हमें अधिकार ही नहीं है। व्यक्ति अपनी कथित धारणा के मुताबिक बर्ताव करने के लिए बंधा हुआ नहीं है। दिनभर के दौरान वह भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से गुजर रहा होता है। उसी अनुसार उनकी वाणी, वर्तन स्वभाव कार्य करते हैं। उसका मन प्रसन्न है तो वो आपके अनुसार कार्य करने को तैयार हो जायेगा और मन अप्रसन्न या क्रोधित होगा तो वो आपकी बात का अनुकूल प्रत्युतर नहीं देगा।

बहुत लोगों की विचार शक्ति कुंठित हो गई होती है। उनका मन बंधक होकर मौलिक रीति से विचार करने को तैयार नहीं होता। इसलिए ऐसे व्यक्तियों की प्रगति भी स्थगित हो जाती है। मौलिकता के अभाव में वे नौकरी धंधा, व्यवसाय में सफल हो नहीं सकता और दोष खुद की कंपनी, कर्मचारियों, भाग्य, कदरदानियों का अभाव आदि-आदि को देते रहता है। 'दि पॉवर ऑफ थॉट' अर्थात विचार नियम के अनुवाद वार्ता संरक्षण के अंतर्गत दुनिया में दो प्रकार के लोग दिखाये हैं।

1) ऐसे लोग जो जिंदगी के मालिक होते हैं।

2) ऐसे लोग जिन्हों की जिंदगी मालिक होती है।

सर श्री ने इस सिद्धांत को विचार सूत्र के रूप में इस्तेमाल किया है वे हैं ''विश्व में कोई भी वस्तु का भौतिक निमार्ण होने के पहले वैचारिक निमार्ण होता है।'' ओ कस्टस विलियम हेयर ने एक वाक्य में कहा है- '' विचार हवा है, ज्ञान पतवार है, और मानव जाति नाव है।''

यह बात सर श्री ने दो उदाहरणों के द्वारा समझायी है। कल्पना करो कि हम अपने मन की नदी में रहते हैं, जो नदी अपनी होडी की चारों तरफ बह रही है। इस नदी में अपने विचार गिरते रहते हैं जो कि जल्द ही वास्तविकता में बदल जाते हैं क्योंकि नदी का काम ही यही है, विचारों की वास्तविकता बदलने का। हम जो विचार करते हैं, उनका यह नदी पालन करती है और चीज़े प्रगट हो जाती हैं। इस नदी की शक्ति अनंत है। वैचारिक शक्ति का महत्व और असर समझने के लिए उसने दूसरा भी एक दृष्टांत दिया है।

उनके अनुसार फ्रान्स में एक कैदी को फांसी की सजा सुनाई गई। यह समाचार मिलते ही कुछेक डॉक्टर्स और मनोवैज्ञानिक जो कि मन पर प्रयोग कर रहे थे उसने कोर्ट में अपील की और कैदी को मारने की मंजूरी ले ली।

''कैदी को एक पलंग पर लिटाकर उसे मृत्यु की विधि के बारे में समझाया गया। उनको कहा गया कि धीरे-धीरे हम आपके शरीर से पूरा ही रक्त निकाल लेने वाले हैं। शरीर में से एक बड़ी बोटल रक्त निकलने पर आपको पसीना आने लगेगा। दूसरी बोटल रक्त निकलने पर आपको कमजोरी का अनुभव होने लगेगा। तीसरी बोटल निकालने के साथ आपकी आँखों के आगे अंधेरा छा जायेगा। चौथी बोटल रक्त निकालने पर आपकी कर्मेन्द्रियां काम करना बंद कर देंगी। आप बेहोश होने लगेंगे फिर धीरे-धीरे रक्त निकालते रहने के कारण अंत में आपकी मृत्यु हो जायेगी। इस तरह कैदी को इस बात का विश्वास दिला दिया

शेष पेज ४ पर...

अतीत को भूल देहातीत बनो

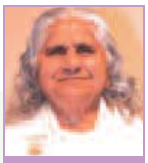
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हम ब्राह्मण कथावाचक हैं, सिर्फ पंडित की तरह कथा नहीं करते हैं। सत्य परमात्मा बाप के महावाक्यों से हम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं। परंतु हर एक की करनी को देखो, नारायण जैसी हो, लक्षण देखो लक्ष्मी नारायण के हैं! करने में लक्ष्मी, हिम्मत, विश्वास नारायण का, जो करना है अब कर लें, वो पूछने की बात नहीं है। हम ऐसी करनी करें, ऐसे दिल से पाठ करें जो कोई का कारणे अकारणे योग नहीं लगता, सेवा में विघ्न आते तो वो हट जायें, उनके कष्ट दूर हो जायें। हम जा रहे हैं ऊपर में, और आत्मायें सिर्फ देखती रह न जायें, वो भी हमारे साथ चलने की तैयारी करने में लग जायें। फिर हम ब्राह्मणों को गृहस्थी नहीं खिला सकते हैं बल्कि हम ही गृहस्थियों को खिला करके ब्राह्मण बनाते, कितना फर्क है!

मेरे मीठे-मीठे बाबा ने कहा क्षत्रिय नहीं बनना है। क्षत्रिय युद्ध करता है बिचारा, करूँ न करूँ, क्या करूँ? कैसे करूँ? जो चिंता करता है वो वैश्य है इसलिए थोड़ी भी चिंता नहीं। चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होए। होने वाला अच्छा ही है, जो कुछ होता है उसमें भला ही है इसलिए यह क्यों हुआ... की बात नहीं। क्षत्रिय कहता है मैं तो घबरा गई हूँ। जिसको चिंता है, वो व्यर्थ चिंतन छोड़ता नहीं है। चिंता वाले को व्यर्थ चिंतन छोड़ता नहीं है। व्यर्थ चिंतन ऐसा है उस घड़ी महसूस नहीं करता यह व्यर्थ है। व्यर्थ ऐसा रूप धारण करता है जो यह भी महसूस नहीं होता है कि यह व्यर्थ है। मैं तो अज़ब खाती हूँ। इसलिए इतना पॉज़ीटिव और प्योर, पावरफुल संकल्प हो जो व्यर्थ कोई पास भी न आ सके। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के बाद क्या कहूँ, जो खराब संकल्प आता है अशुद्ध संकल्प आता है तो वे कौन हैं? किसी से वैर भावना होती है, बदला लेने का ख्याल आता है वो कौन है? नाम नहीं लूंगी। पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के भेंट में सोचो, थोड़ा भी यह ख्याल आता है तो वो कौन हुआ?

संगमयुग पर मेरे बाबा ने इतना अंदर ही अंदर परिवर्तन किया है, उस परिवर्तन की रिज़ल्ट आज इतनी बड़ी सभा सामने बैठी है। बाबा ने किया है, हम बच्चों से कराया है। हम ब्राह्मण सेवाधारी हैं। सेवा लेते नहीं हैं क्योंकि संगमयुग है ही त्याग तपस्या और सेवा के लिए। प्रैक्टिकल लाइफ मेरे ब्रह्मा बाबा की देखी, ब्रह्मा बाबा आइना है। आज्ञाकारी है तो बाबा की श्रीमत सिर माथे पर है, वफादार है, कभी बाबा के सिवाय किसी को याद नहीं किया और कभी याद आता नहीं, इतना ही नहीं देहधारी की याद आ नहीं सकती, क्योंकि अपनी देह ही भूल गई ना, तो देहधारी कहाँ याद आयेगा। ईमानदार है तो ट्रस्टी, मेरा कुछ नहीं, फरमानबरदार है तो हज़ूर के सामने सदा जी हाज़िर, बिना बुलाये ही हाज़िर हो जायेंगे, इतना प्यार इतना रिगार्ड हो।

बाबा कहता है यह याद रहे-यह हमारा अन्तिम जन्म है, 84 का चक्र लगाया है। अब बाबा के साथ मुक्तिधाम में वापस जाना है, सतयुग में आना है। मुक्तिधाम में तो सब जायेंगे, पर हम कैसे जायेंगे? न चाहते भी सबको जाना ही है। पुरुषार्थ न करें तो उसकी मर्जी, परंतु हम पुरुषार्थ कर रहे हैं मुक्तिधाम में जाना है फिर साथ-साथ जीवनमुक्ति में आना है, इसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है? बहुतकाल से योग लगाने वाला ब्राह्मण योगी उसके लिए भगवान कहता है वो अन्त में मेरे साथ वापस चलेगा, तो देखो मैं उसमें हूँ? नहीं हूँ तो लगाओ अपने को चमाट, जल्दी सीधे हो जाओ। हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए खड़ा न होना पड़े। मैं क्या करूँ, हिसाब-किताब कड़ा है ना, क्या करूँ? कान बहरे हैं क्या? बाबा ने इतना सुनाया, इतना सुनाया है जो अन्धों की भी आँखें खुल जाती हैं, रास्ता क्लीयर हो जाता है। तो सुन-सुन अन्धे पावे राह... जब यह गीत बजता था नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु... पग-पग ठोकर खाऊँ मैं...। जागे हैं तो जगाओ... तू प्यार का सागर है... हर एक गीत देखो कितने अच्छे हैं, प्यार के सागर ने प्यार देके जगा लिया। ज्ञान पीछे मिला है प्यार पहले मिला है।

हताश में आश जगाता है विधाता

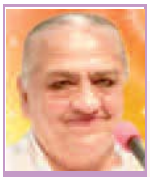
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

मीठे बाबा ने समय का इशारा देते हुए कहा है कि अभी मन्सा सेवा की बाहुता-बाहुता आवश्यकता है क्योंकि दुनिया में चारों ओर देखो चाहे देश में, चाहे विदेश में कितने भी धनवान हों, कितने भी एज्युकेटेड हों... लेकिन हर एक को यह भय है कि आगे क्या होने वाला है? वर्तमान का डर तो है ही क्योंकि वायुमण्डल ही खराब हो रहा है लेकिन भविष्य का भय है कि आखिर क्या होने वाला है और हम बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि हमें बाबा ने सुना दिया है, दुनिया वालों को तो बहुत बुरा-बुरा दिखाई दे रहा है... हम कहते हैं इस बुराई में भी अच्छाई समाई हुई है। दुनिया वाले तो बिचारे निराश हो गये हैं कि पता नहीं क्या होगा! उन्हें बहुत मुश्किल लगता है। लेकिन हमें बाबा ने बताया है कि यह जो गिरावट हो रही है, समय प्रमाण यह बुराई अति में जानी ही है।

जब स्थापना हुई थी उस समय ही बाबा ने यह स्लोगन सुनाया था कि किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाए... और सफल उसकी होगी जो खर्चे दाता के नाम...। उस समय इतनी यह अति की हालतें नहीं थीं। तो हम लोग बाबा को कहते थे कि बाबा ऐसा भ्रष्टाचार तो दिखाई नहीं दे रहा है। तो बाबा कहता था आगे चलते चलो, आगे देखो क्या होता है? लेकिन अभी तो जो बाबा ने कहा वो प्रैक्टिकल सोचने से भी ज़्यादा है। जो नहीं सोचो वो हो रहा है। कोई भी डिपार्टमेंट पापाचार, भ्रष्टाचार से सेफ नहीं रहा है। अभी तो खुले अखबारों में भ्रष्टाचार का नाम आ रहा है। खुला बाज़ार है, छिपा हुआ नहीं है। तो यह सब देखकर हमको डर नहीं लगता या दु:ख नहीं होता क्योंकि हम भविष्य के राज़ को जानते हैं कि यह अति में जाकर अन्त होगा फिर उस राज्य की आदि होगी क्योंकि अति के बाद ही अन्त होता है। नियम है ना, 12 के बाद ए.एम. ऑटोमेटिक शुरु हो जाता है। तो अति के बाद अन्त है और अन्त के बाद है आदि। उस आदि में फिर हमारा राज्य होगा। इसलिए हमको फिकर नहीं लगता है कि क्या होगा? जो होना था वही हो रहा है। इसलिए बाबा मुरली में कहते हैं-मिरूआ मौत मलूक का शिकार...। तो हम बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि परिवर्तन तो होना ही है।

जो भी बाबा का बच्चा बना है, कोई भले माया के, विघ्नों के चक्कर में आ करके ढ़ीले भी हो गये हों, लेकिन जिसने कहा मेरा बाबा माना उसके पास स्वर्ग की चाबी है ही। तो हम सभी को गेट पास की तो कोई चिंता नहीं है, लेकिन सीट कौन सी लेनी है? जो संगमयुग पर सीट पर सेट होगा, कभी अपसेट नहीं होगा, उसी को अच्छी सीट मिलेगी। सीट पर सेट नहीं है तो अपसेट है। हम ब्राह्मण हैं तो एक अकालतख्त, दूसरा बाबा का दिलतख्त और तीसरा भविष्य राज्य तख्त मिलना ही है। यह तीन तख्त बाबा ने हम सबको दिया है जो सारे कल्प में ऐसा कोई को नहीं मिलेगा। बाबा ने एक साथ तीन तख्त दिये हैं, तो कभी किस तख्त पर बैठो, कभी किस तख्त पर बैठो। जैसे माँ बच्चे को कितना भी बचाये कि मिट्टी से ना खेले, मिट्टी खाये नहीं फिर भी वो बार-बार मिट्टी में चला जाता, तो बाबा ने भी हमें देखो कहाँ-कहाँ से ढूंढ के निकाला है, खुद भगवान ने हमको ढूंढ़ा। लोग तो बिचारे भगवान को अभी तक भी ढूंढ़ रहे हैं और हमें भगवान ने ढूंढ़ा है। तो हमें कितना नशा है! तो बाबा कहते नशे की इतनी बातें बता दी हैं आपको, स्वमान की लिस्ट देखो उसी में स्थित रहो।